भौमोऽत्रिः।वरुणः। त्रिष्टुप्।

प्र सम्राजे बृहदर्चा गभीरं ब्रह्म प्रियं वरुणाय श्रुताय।

वि यो जघान शमितेव चर्मोपस्तिरे पृथिवीं सूर्याय॥ ५.०८५.०१

यः। शमिता- रोगशमनकारकश्चिकित्सकश्चिकित्सायै। चर्म। विजघान इव - यथा हिंसितवांस्तथा। पृथिवीम्- अन्तरिक्षम्। सूर्याय- सवित्रे। उपस्तिरे- आस्तरणाय यथावश्यकसूर्यज्योतिषो भूमौ प्रचाराय हिंसितवान्। तस्मै। सम्राजे- राज्ञे। श्रुताय- श्रुतिप्रसिद्धाय। वरुणाय- जलाधिदैवतायेत्याधिभौतिके। ऋताधिदैवतायेत्याध्यात्मिके। बृहत्- महान्तम्। गभीरम्- गम्भीरम्। प्रियम्। ब्रह्म- मन्त्रम्। प्र- प्रकर्षेण। अर्च- समर्पय॥१॥

वनेषु व्यऽन्तरिक्षं ततान वाजमर्वत्सु पय उस्रियासु।

हृत्सु क्रतुं वरुणो अप्स्वऽग्निं दिवि सूर्यमदधात्सोममद्रौ॥ ५.०८५.०२

वनेषु- अरण्येषु। अन्तरिक्षम्- अवकाशम्। ततान- ससर्ज। अर्वत्सु- अश्वेषु। वाजम्- गतिम्। उस्रियासु- गोषु। पयः- क्षीरम्। हृत्सु- हृदयेषु। क्रतुम्- सङ्कल्पं प्रज्ञां वा। अप्सु- उदकेषु। अग्निम्- पावकम्। दिवि- नभसि। सूर्यम्। अद्रौ- गिरौ। सोमम्। वरुणः- ऋताधिदेवता। अदधात्- अस्थापयत्॥२॥

नीचीनबारं वरुणः कबन्धं प्र ससर्ज रोदसी अन्तरिक्षम्।

तेन विश्वस्य भुवनस्य राजा यवं न वृष्टिर्व्युनत्ति भूम॥ ५.०८५.०३

नीचीनबारम्- अधोमुखबिलम्। कबन्धम्- उदकवन्तं मेघम्। वरुणः- ऋताधिदेवता। प्र- प्रकर्षेण। ससर्ज। रोदसी- द्यावापृथिव्यौ। अन्तरिक्षम्। ससर्ज। तेन- अनेन। कर्मणा। विश्वस्य- सर्वस्य। भुवनस्य- जगतः। राजा- स्वामी वरुणः। वृष्टिः- सेचकः पुरुषः। यवम्। न- प्ररोहाय सर्वत्र प्रसारयतीव। भूम- पृथिवीम्। व्युनत्ति- सर्वत्रोनत्ति॥३॥

उनत्ति भूमिं पृथिवीमुत द्यां यदा दुग्धं वरुणो वष्ट्यादित्।

समभ्रेण वसत पर्वतासस्तविषीयन्तः श्रथयन्त वीराः॥ ५.०८५.०४

भूमिम्- पृथिवीम्। पृथिवीम्- अन्तरिक्षम्। उत- अपि च। द्याम्- नभः। उनत्ति- क्लेदयति। यदा। वरुणः- ऋताधिदेवता। दुग्धम्- उदकपूरणम्। वष्टि- कामयते। आदित्- तदा। पर्वतासः- अद्रयः। अभ्रेण- मेघेन। सम्- सम्यक्। वसत- आच्छादयन्ति। तविषीयन्तः- बलकामाः। वीराः- मरुतो वाताः। श्रथयन्त- मेघान् श्रथयन्ति ॥४॥

इमामू ष्वासुरस्य श्रुतस्य महीं मायां वरुणस्य प्र वोचम्।

मानेनेव तस्थिवाँ अन्तरिक्षे वि यो ममे पृथिवीं सूर्येण॥ ५.०८५.०५

इमाम्- एताम्। श्रुतस्य- श्रुतिप्रसिद्धस्य। असुरस्य- प्राणदस्य। वरुणस्य- जलाधिदैवतस्य ऋताधिदैवतस्य। महीम्- महतीम्। मायाम्- प्रज्ञाम्। प्र वोचम्- प्रकर्षेण ब्रवीमि। अन्तरिक्षे। मानेनेव- मानं कर्तुमिव। तस्थिवान्- तस्थौ। पृथिवीम्- अन्तरिक्षम्। सूर्येण- सूर्यरश्मिना। वि ममे- व्याप्तमकरोत् ॥५॥

इमामू नु कवितमस्य मायां महीं देवस्य नकिरा दधर्ष।

एकं यदुद्ना न पृणन्त्येनीरासिञ्चन्तीरवनयः समुद्रम्॥ ५.०८५.०६

एकम्। समुद्रम्- अर्णवम्। एनीः- शुभ्राः। अवनयः- नद्यः। आसिञ्चन्तीः- उदकमासेचयन्त्यः। उद्ना- उदकेन। न। पृणन्ति- पूरयन्ति। तद्वत्। कवितमस्य- अतिशयेन क्रान्तदर्शिनः। देवस्य- वरुणस्य। महीम्- महतीम्। मायाम्- प्रज्ञां शक्तिं वा। इमाम्- एताम्। नकिः- न कोपि। आ दधर्ष- हिनस्ति ॥६॥

अर्यम्यं वरुण मित्र्यं वा सखायं वा सदमिद्भ्रातरं वा।

वेशं वा नित्यं वरुणारणं वा यत्सीमागश्चकृमा शिश्रथस्तत्॥ ५.०८५.०७

अर्यम्यम्- सौशील्याधिदैवतम्। वरुण- ऋताधिदैवत। मित्र्यम्- स्नेहाधिदैवतम्। सखायम्- सुहृद्भूतम्। सदमित्- सदैव। भ्रातरम्। वा। वेशम्- शरण्यम्। नित्यम्- सनातनम्। अरणम्- शरणम्। वरुण। त्वां वा प्रति। यत्। सीम्- सर्वतः। आगः- पापम्। चकृम। तत्। शिश्रथः- विनाशय ॥७॥

कितवासो यद्रिरिपुर्न दीवि यद्वा घा सत्यमुत यन्न विद्म।
सर्वा ता वि ष्य शिथिरेव देवाधा ते स्याम वरुण प्रियासः॥ ५.०८५.०८

दिवि- देवने। कितवासः- अक्षकितवाः। रिरिपुः- लेपयन्ति। न- तद्वत्। यत्- यत्पापमस्मास्वारोपितम्। यत्। सत्यम्- ज्ञातम्। यत्। न। विद्म- जानीमः। सर्वा- सर्वाणि। ता- तानि। शिथिरेव- शिथिलानीव। वि स्य- विमोचय। देव। अध- अथ। वरुण। ते- तव। प्रियासः- प्रियाः। स्याम- भवेम ॥८॥